

# ट्राएंगल फैक्ट्री में लगी आग

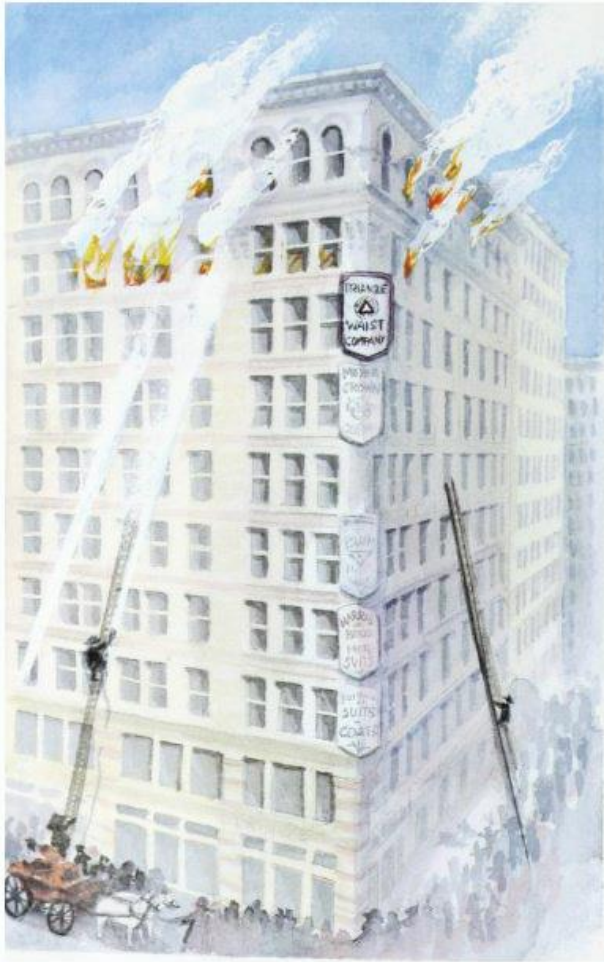


होली लिटिलफील्ड

चित्र: मैरी ओ'कीफ यंग

# ट्राएंगल फैक्ट्री में लगी आग





ट्राएंगल फैक्ट्री  
में लगी आग

## लेखक का नोट

1900 की शुरुआत में, न्यूयॉर्क शहर में दुनिया के किसी भी अन्य स्थान की तुलना में अधिक रेडीमेड कपड़ों के कारखाने थे. इन कारखानों में काम करने वाले लोग बहुत कम वेतन के लिए लंबे घंटे कड़ी मेहनत करते थे - कभी-कभी दिन में 10 घंटे से अधिक और सप्ताह के सातों दिन. इन मज़दूरों में से कई हाल ही में अन्य देशों से आए थे, और उन्हें केवल उन्हीं तरह कारखानों में ही नौकरी मिल सकती थी. यदि वे वहां काम नहीं करते, तो उनके परिवारों के पास भोजन, कपड़े या घर के किराये के लिए भी पैसे नहीं होते.

कारखानों में परिस्थितियां अप्रिय और अक्सर बहुत खतरनाक होती थीं. उन दिनों, ऐसे बहुत कम कानून थे जो मज़दूरों के लिए कार्यस्थल को सुरक्षित बनाते थे. फैक्ट्रियों में भीड़ और गंदगी होती थी, खराब रोशनी और कम वेंटिलेशन होता था. कई इमारतों में आग लगने पर भागने के द्वार नहीं थे. ऐसा लगता था जैसे कारखाने के मालिकों को, अपने श्रमिकों की सुरक्षा की तुलना में, पैसा कमाने की अधिक परवाह थी.

ट्रायंगल शर्टवाइस्ट कंपनी, न्यूयॉर्क शहर में वाशिंगटन प्लेस और ग्रीन स्ट्रीट के कोने पर ऐश बिल्डिंग की 8वीं, 9वीं और 10वीं मंजिल पर स्थित थी. 600 से अधिक लोग, ज्यादातर अप्रवासी महिलाएं और पूर्वी यूरोप, रूस और इटली की लड़कियां, इस ट्रायंगल फैक्ट्री में काम करती थीं. वहां पर महिलाओं के फैंसी ब्लाउज जिन्हें “शर्टवाइस्ट” कहा जाता था बनते थे.

ब्लाउज को पतले सूती कपड़े या लिन्न के कपड़े से बनाया जाता था. यह सामग्री इतनी नाजुक होती थी कि वो कागज से भी ज्यादा आसानी से जल सकती थी. इसके बावजूद फैक्ट्री के मालिक अग्नि सुरक्षा पर बिल्कुल ध्यान नहीं देते थे. सिलाई मशीन के तेल के कनस्टर, स्क्रेप कपड़े की गांठों के पास पड़े रहते थे. अत्यधिक ज्वलनशील पैटर्न छत के नीचे तारों से लटके होते थे, और वहां पर मजदूरों को धूम्रपान करने की अनुमति थी. वहां कभी कोई आग-ड्रिल आयोजित नहीं की गई थी, और इमारत में आग से बचने वाला एक पुराना, "फायर-एस्केप" फर्श के ऊपर दो मंजिलों के बाद बंद कर दिया गया था. श्रमिकों ने उसको लेकर बार-बार शिकायत की - और सुरक्षा की अपनी मांग के लिए हड़ताल पर भी गए. उसके बावजूद इमारत को अग्निरोधक (फायर-प्रूफ) बताया गया, और वो हमेशा फायर सुरक्षा इंस्पेक्शन में पास हुई.

शनिवार 25 मार्च 1911 को ट्रायंगल फैक्ट्री में आठवीं मंजिल पर आग लग गई. यह उस आग में फंसी दो युवतियों की कहानी है. हालांकि पात्र काल्पनिक हैं, लेकिन जो घटनाएं हुईं, वे उन लोगों की वास्तविक यादों पर आधारित हैं जो भाग्यवश उस भीषण आग से बच निकले थे.



25 मार्च, 1911

मिन्नी लेविन अपनी इमारत की सीढ़ियों से नीचे गली में भागी.

न्यूयॉर्क शहर में वसंत, जल्द ही आने वाली थी.

लेकिन बाहर अभी भी ठंड थी.

मिन्नी आज काम पर जल्दी ही निकल गई थी.

अभी सूरज तक नहीं निकला था.

उसने अपने दोनों हाथों को आपस में रगड़ा.

वो खुद को गर्म रखने के लिए जितनी तेजी से बन पाया, उतनी तेजी से चली.



गली लगभग खाली थी.

मिन्नी जिन दुकानों के सामने से गुज़री वे सभी बंद थीं.

वो शनिवार का दिन था, यहूदी लोगों की छुट्टी का दिन.



मिन्नी के पड़ोसियों के लिए वो आराम का दिन था.

लेकिन अधिकांश कारखाने शनिवार को बंद नहीं होते थे.

मिनी, ट्राएंगल शर्टवाइस्ट कंपनी में काम करती थी.

वो कंपनी "शर्टवाइस्ट" नाम के फेंसी ब्लाउज बनाती थी.

मिन्नी ने 10 साल की उम्र में ही फैक्ट्री में काम करना शुरू कर दिया था.

तब उसका काम तैयार ब्लाउजों से लटके ढीले धागों को काटना था.

उसकी उम्र के छोटे बच्चों को, कारखानों में काम नहीं करना चाहिए था.

इसलिए जब कोई इंस्पेक्टर आता, तब मिन्नी कपड़े के एक बड़े डिब्बे में छिप जाती थी.

उसकी उम्र की दूसरी लड़कियां भी वही करती थीं.

मिन्नी और उसकी सबसे अच्छी दोस्त, टेसा, दोनों मिलकर एक ही डिब्बे में छिपते थे.

वो जानती थीं कि इंस्पेक्टर द्वारा पकड़े जाने पर वे अपनी नौकरी खो देंगी.

पर अब मिन्नी की उम्र 14 साल थी.

अब उसे छिपने की जरूरत नहीं थी.

अब उसे फैक्ट्री में अधिक महत्वपूर्ण काम दिया गया था.

मिन्नी और टेसा दोनों सिलाई मशीनें चलाती थीं.



उन्हें 7:15 बजे काम पर पहुंचना होता था.

कभी-कभी 10 घंटे बाद भी, शाम 5:00 के बाद भी, उनका काम खत्म नहीं होता था.

ट्रायंगल फैक्ट्री, वाशिंगटन प्लेस और ग्रीन स्ट्रीट के कोने पर स्थित थी.



उसके घर से फैक्ट्री बहुत दूर थी.

लेकिन मिन्नी को चलकर जाना पसंद था.

चलते समय उसे टेसा से बात करने का मौका मिलता था.

मिन्नी के पापा नाराज होते अगर उन्हें पता चलता कि टेसा उसकी दोस्त थी.

मिन्नी के पापा पोलैंड में पले-बढ़े थे.

एक यहूदी लड़की कभी भी किसी कैथोलिक लड़की के साथ दोस्ती नहीं कर सकती थी.

लेकिन पापा को यह बात अभी भी समझ में नहीं आई थी.

अमेरिका में चीजें बहुत अलग थीं.





फिर मिन्नी, टेसा की गली में घुसने के लिए मुड़ी.

टेसा के इतालवी पड़ोस में, पवित्र दिन रविवार होता था.

इसलिए वहां शनिवार को दुकानें खुली थीं.

सड़कों पर लोग दिन के काम की तैयारी में व्यस्त थे.

टेसा अपनी बिल्डिंग के सामने इंतजार कर रही थी.

मिन्नी को देखकर वो मुस्कराई.

"मुझे डर था कि तुम आज सुबह नहीं आओगी," टेसा ने कहा. "आज बहुत ठंड है. मुझे लगा कि तुम आज ट्रॉली से आओगी."

"नहीं," मिनी ने कहा. "मैं तुम्हारे साथ चलना चाहती थी."

फैक्ट्री में, दोनों लड़कियों ने नौवीं मंजिल तक लिफ्ट में सवारी की।

फिर उन्होंने अपने ऊनी कोट उतारे और वे वर्करूम में चली गईं।

साढ़े सात बजे बिजली चालू हुई।

फिर सिलाई मशीनों ने गुनगुनाना शुरू कर दिया।

ऐसा लग रहा था जैसे वो किसी विशाल मधुमक्खी के छत्ते के अंदर हों।

वहां आवाज इतनी तेज थी कि मिन्नी और टेसा को एक-दूसरे की बात सुनने के लिए चिल्लाना पड़ता था।

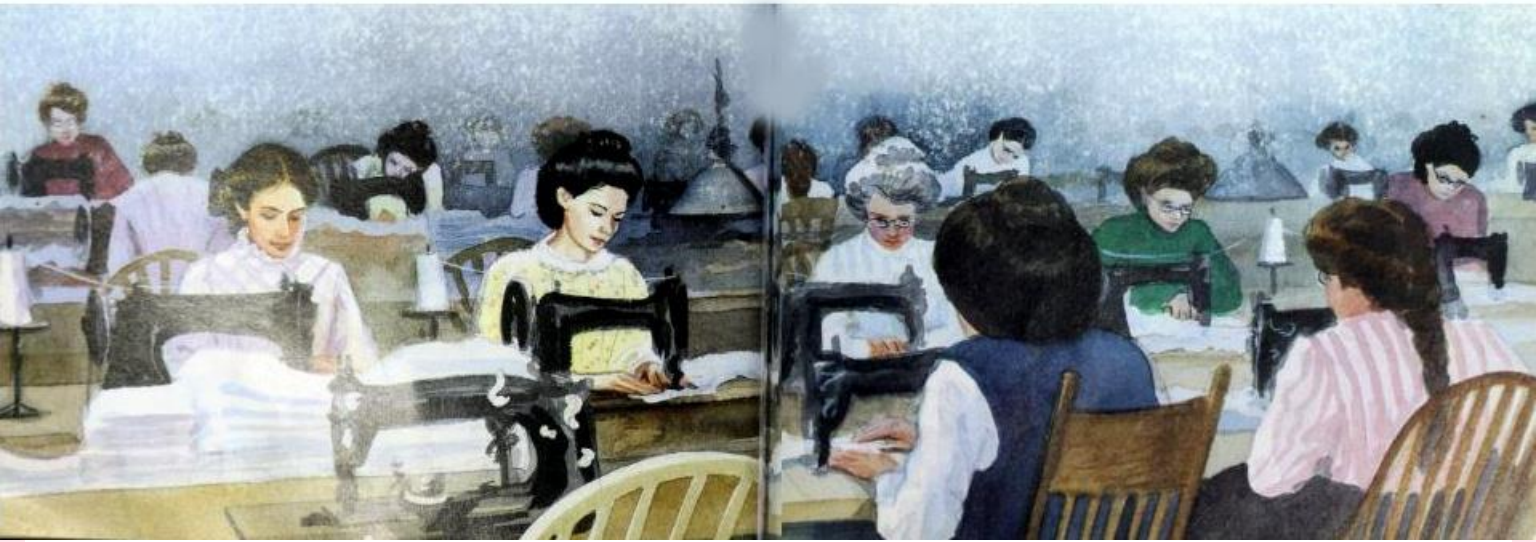
लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ा क्योंकि वहां पर बात करने की अनुमति नहीं थी।

वो बड़ा कमरा, मेजों की कतारों से भरा हुआ था।

हर टेबल पर सिलाई मशीनों की लंबी लाइनें थीं।

मशीनें चलाने वाली युवतियां और महिलाएं साथ-साथ बैठी थीं।

कमरे में इतनी भीड़ थी कि कभी-कभी मजदूरों के कंधे, एक-दूसरे से छूते थे।



फर्श, कपड़े के टुकड़ों और कमीज के पैटर्न से ढका हुआ था।

फिनिशड काम, छत से लटका हुआ था।

सिलाई मशीन का तेल हर जगह था।

सभी जानते थे कि आग आसानी से लग सकती थी।

मिन्नी के वहां काम शुरू करने के बाद से वहां दो छोटी आगें लग चुकी थीं।

कुछ मज़दूरों ने कहा था कि जब तक उनकी समस्याओं का हल नहीं होगा, तब तक वे काम नहीं करेंगे।

उसके बाद मालिकों ने कारखाने को सुरक्षित बनाने का वादा किया।

लेकिन उन्होंने अपना वादा नहीं निभाया।



मिन्नी को बहुत सावधानी से काम करना पड़ता था।

अगर वो सावधानी से काम नहीं करती, तो सिलाई मशीन की सुई के नीचे उसकी उंगली आ सकती थी।

या फिर सिलते समय वो उस पतले सूती कपड़े को फाड़ सकती थी।

मिन्नी एक हफ्ते में केवल छह डॉलर कमाती थी।

लेकिन अगर उससे कोई कपड़ा फटता या उसकी सुई टूटती, तो उसके पैसे कटते थे।

मिन्नी के परिवार को उसकी कमाई के एक-एक पैसे की जरूरत थी.

उन्हें घर का किराया देना था और खाना खरीदना था.

मिन्नी की इच्छा थी कि वो भी अपने भाइयों की तरह ही स्कूल जाए.

लेकिन उसके लिए घर में पर्याप्त पैसा नहीं था.

मिन्नी के पिता जहाज पर कुली थे और लोडिंग का काम करते थे.

उसकी माँ घर पर सिलाई करके कुछ पैसे कमाती थीं.

लेकिन मिन्नी की कमाई के बावजूद उसका परिवार बहुत गरीब था.





लगभग शाम के 5:00 बज रहे थे.  
सिलाई मशीनें बंद कर दी गई थीं.  
मजदूर घर जाने की तैयारी कर रहे थे.  
अचानक, मिन्नी ने कांच टूटने की  
आवाज सुनी.  
"आग!" कोई चिल्लाया.

मिन्नी ने ऊपर देखा और वो ज़ोर से  
चिल्लाई.  
उसने खिड़कियों में आग की लपटें देखीं.  
आग तेजी से आगे बढ़ रही थी.  
आग, कमरे में कपड़े के ढेर को जला रही  
थी.  
मिन्नी ने जो पिछली आगें देखीं थीं उनके  
मुकाबले में यह आग कहीं ज्यादा बड़ी थी.

धीरे-धीरे कमरा धुँ से भर रहा था.

लोगों ने आग से बचने का प्रयास किए.

लेकिन सिलाई मशीनों के बीच की जगह बेहद संकरी और सामान से भरी थी.

वहां से गुजरना मुश्किल था.

कुछ महिलाओं ने मेज़ों के ऊपर से कूदने की कोशिश की.

लेकिन वे सिलाई मशीनों और कपड़ों पर फिसलीं और गिरीं.

लोग धक्का-मुक्की कर रहे थे और चिल्ला रहे थे.

मिन्नी ने टेसा को देखा.

टेसा इतनी डरी हुई थी, कि वो हिल भी नहीं पा रही थी.

मिनी ने अपनी सहेली का हाथ पकड़ा.

"इस तरफ!" वो चिल्लाई.

मिन्नी नीचे गिरी और फिर अपने हाथों और घुटनों के बल टेबल के नीचे रेंगने लगी.

टेसा उसके पीछे-पीछे चली.

कुर्सियाँ और टेबल के पैरों के बीच में से घुसकर जाना उनके लिए कठिन था.

लेकिन अंत में दोनों लड़कियां बड़े कमरे के किनारे पर पहुंच गईं.

"आगे चलो!" मिनी चिल्लाई.

फिर उसने लिफ्ट की ओर इशारा किया.





लिफ्ट के सामने पहले से ही दर्जनों महिलाएं खड़ी थीं.

जब दरवाजा खुला, तो लगभग सभी ने एक-साथ लिफ्ट में अंदर घुसने की कोशिश की.

लिफ्ट एक बार में केवल 10 लोगों को ले जा सकती थी.

मिन्नी और टेसा ने 30 से अधिक महिलाओं को एक-साथ लिफ्ट में घुसते हुए देखा.

कुछ लोग इतने डरे हुए थे कि वे अपनी सुरक्षा के लिए दूसरे लोगों के पैरों को कुचल रहे थे.

"चलो लिफ्ट की बजाए सीढ़ियों से उतरने की कोशिश करते हैं," मिन्नी ने कहा.

धुआँ, मिन्नी की आँखों और गले में चुभ रहा था.

वो बड़ी मुश्किल से देख पा रही थी.

अचानक मिन्नी को कुछ महसूस हुआ.

उसे अपनी टांगों के पास कुछ जलता हुआ महसूस हुआ.

उसने नीचे देखा और वो ज़ोर से चिल्लाई.

उसकी पोशाक में आग लग गई थी!

मिन्नी घूमी और उसने अपने हाथों से थप्पड़ मारकर आग की लपटें बुझाने की कोशिश की.

टेसा मदद के लिए चिल्लाई.

लेकिन आग के शोर में कोई भी उसकी आवाज़ सुन नहीं पाया.

उसे मिन्नी को बचाना था!

तभी टेसा को दीवार से लटकी हुई एक पानी की बाल्टी दिखाई दी.

उसने झटके से बाल्टी पकड़ी और मिन्नी के ऊपर पानी फेंका.

उससे आग बुझ गई.



"क्या तुम ठीक हो?" टेसा चिल्लाई.

मिन्नी का चेहरा आँसुओं से ढका हुआ था.

लेकिन उसने अपना सिर हिलाया.

"फिर चलो!" टेसा चिल्लाई.

"हमें यहाँ से निकलना ही होगा!"





सीढ़ी के दरवाजे के सामने भी लोगों की भीड़ थी.

"वो दरवाज़ा बंद है!" एक औरत चिल्लाई.

उसने दरवाजे को अपनी मुट्ठियों से पीटा.

"उन्होंने हमें अंदर बंद कर दिया है."

तब मिन्नी को याद आया कि फोरमैन हमेशा उस दरवाजे को बंद रखता था.

शिफ्ट खत्म होने से पहले मालिक सुनिश्चित करना चाहते थे कि कोई भी मजदूर जल्दी घर जाने की कोशिश न करे और न ही कुछ चोरी करे.

अब वो बंद दरवाजा, मजदूरों को आग से बचने से रोक रहा था.

धुंआ गहराता जा रहा था.

लोग खांस रहे थे.

वे सांस नहीं ले पा रहे थे.

उनमें से कुछ खिड़कियों की ओर भागे और उन्होंने कांच तोड़े.

उन्होंने बाहर कूदकर आग से बचने की कोशिश की.

लेकिन वे ज़मीन से नौ मंजिल ऊपर थे.

मिन्नी जानती थी कि कोई भी इतनी ऊंचाई से कूदकर बच नहीं सकता था.

"हमें दूसरी सीढ़ी से उतरने की कोशिश करनी चाहिए!" टेसा चिल्लाई.

वे धुएं के बीच रेंगकर दूसरी सीढ़ी तक गए.

भाग्यवश, वहां का दरवाज़ा खुला था.

लड़कियां सीढ़ियों से नीचे भागीं.

अचानक उन्होंने सामने की सीढ़ी पर नीचे की ओर आग देखी.

"ऊपर वापस चलो, टेसा," मिन्नी चिल्लाई.  
"छत पर जाओ!"

वे मुड़े और जितनी तेजी से सीढ़ियाँ चढ़ सकते थे वे उतनी तेजी से भागे.

सीढ़ियां अब किसी भट्टी की तरह गर्म थीं.

चढ़ते समय लड़कियां सांस लेने के लिए हांफने लगीं.

टेसा फिसली और गिर पड़ी.

लेकिन मिन्नी ने उसका हाथ पकड़ा और आखिरी कुछ सीढ़ियां चढ़ने में उसकी मदद की.

वे अंत में दरवाजे से होकर छत पर पहुँचे.





वहां पर मिन्नी और टेसा ने ताज़ी हवा में गहरी साँसें लीं.

"यहाँ आओ, लड़कियों," किसी ने कहा.

कुछ अन्य लोग भी छत पर दौड़कर पहुँच गए थे.

वे इमारत के किनारे पर खड़े थे.



बगल में एक विश्वविद्यालय था.

कुछ छात्रों ने एक सीढ़ी नीचे की – अपनी बिल्डिंग से जलती हुई इमारत की छत तक.

"जल्दी करो!" छात्र चिल्लाए.

"यहाँ पर आओ. फिर तुम सुरक्षित रहोगी."

मिन्नी डर गई.

लेकिन उसे पता था कि आग से बचने के लिए उसे उस सीढ़ी पर चढ़ना ही होगा.

छात्रों ने सीढ़ी को पकड़कर स्थिर रखा.  
एक-एक कर छत पर बैठे लोग उस पार गए.  
सीढ़ी चढ़ते समय मिन्नी के हाथ काँप रहे थे.  
"नीचे मत देखना," उनमें से एक छात्र ने कहा.  
मिन्नी ने अपनी आँखें कसकर बंद कर लीं.  
वो नीचे देखने से डर रही थी.  
मिन्नी ने ध्यान से सीढ़ी के हर डंडे को पकड़ा.  
अंत में, उसने अपनी कमर के चारों ओर दो  
हाथ महसूस किए.

जब कुछ छात्रों ने उसे सीढ़ी से उठाया,  
तब उसने अपनी आँखें खोलीं.

टेसा उसके पीछे-पीछे आई.

फिर मिन्नी और टेसा, छात्रों के साथ  
यूनिवर्सिटी की बिल्डिंग से बाहर निकलीं  
और सड़क पर आईं.





हर जगह लोग थे.

पुलिस, आग को देखने आए लोगों को रोकने का प्रयास कर रही थी.

फायर-ब्रिगेड के पाइप और सीढ़ियों से गली भरी थी.

आग से कई लोग घायल हो गए थे.

खिड़कियों से कूदने वाली अधिकांश लड़कियों की मौत गिरने से हुई.

अचानक टेसा लड़खड़ाई और उसने मिन्नी का हाथ पकड़ लिया.

"क्या हुआ, टेसा?" मिन्नी ने पूछा.

"सीढ़ी चढ़ते समय मेरे टखने में चोट लगी थी," टेसा ने कहा.

उसकी आँखों में आँसू थे.

"मैंने तब उस पर ध्यान ही नहीं दिया था.लेकिन अब मुझे नहीं लगता कि मैं आगे चल पाऊँगी. मैं घर कैसे पहुंचूँगी?"

मिन्नी अपनी सहेली के पास बैठ गई.

"चिंता मत करो, टेसा," मिन्नी ने कहा.  
"मैं तुम्हें घर पहुँचा दूँगी."

हालाँकि, मिन्नी चिंतित थी.

उसे पता था कि वो टेसा को उठाकर घर तक नहीं ले जा सकती थी.



तभी, मिन्नी ने अपने नाम की एक  
आवाज सुनी.

उसने ऊपर देखा.

वो उसके पापा थे.

उन्होंने मिन्नी को उठाया और अपने गले  
लगाया.

मिन्नी, पापा के गले लगकर रोने लगी.

उसे पापा की बाहों में सुरक्षित रहना  
अच्छा लगा.

"ओह, पापा, मैं बहुत डरी हुई थी," उसने  
कहा.

पापा ने मिन्नी के बालों को पीछे किया.

"मिन्नी, फ़िक्र मत करो. अब सब अभी  
ठीक-ठाक है," उन्होंने कहा.

"मैं जितनी तेजी से आ सकता था मैं  
आया. मुझे तुम्हारी काफी चिंता हो रही  
थी. चलो अब घर चलें."





"पापा," मिन्नी ने कहा.

"मैं अपनी दोस्त टेसा को यहाँ नहीं छोड़ सकती हूँ. वो चल नहीं सकती है. मैं मलबरी स्ट्रीट तक उसे उसके घर पहुंचाने में मदद करूंगी."

मिनी ने अपने पिता की ओर देखा.

वो जानती थी कि पापा उस पर नाराज होंगे.

पापा ने उसे बार-बार इतालवी बस्ती में जाने से मना किया था.

पापा ने उसे किसी भी कैथोलिक से बात करने से भी मना किया था.

उसके पिता ने मुँह पर गुस्सा झलक रहा था.

"मिन्नी," उन्होंने कहा. "मुझे यकीन है कि उस लड़की के कुछ अपने लोग उसकी मदद करने जरूर आएंगे."

"नहीं पापा," मिनी ने कहा. "टेसा मेरी दोस्त है. उसने आज मेरी जान बचाई थी. मेरी पोशाक में आग लग गई थी और उसने उस आग को बुझाया था. प्लीज पापा. उसे हमारी मदद की सख्त जरूरत है."

"इस इतालवी लड़की ने तुम्हें आग से बचाया?" पिता ने पूछा.

"हाँ पापा," मिनी ने कहा.

मिनी के पिता ने कुछ नहीं कहा.

वह सिर्फ टेसा को देर तक घूरते रहे.

टेसा ने उनकी ओर देखा और वो मुस्करा दी.

फिर उसने हाथ बढ़ाया.

"मुझे आपसे मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई है, सर," उसने शरमाते हुए कहा. मेरा नाम टेसा मोनेट्टी है."

मिन्नी ने देखा कि उसके पिता के चेहरे पर से मायूसी धीरे-धीरे गायब हो रही थी.

पापा ने टेसा का हाथ थाम लिया.



"तुम्हारा बहुत-बहुत, मिस मोनेट्टी, तुमने मेरी मिन्नी को बचाया," उन्होंने कहा. "मैं घर पहुँचाने में तुम्हारी मदद जरूर करूँगा."

"मैं आपको किसी परेशानी में नहीं डालना चाहती हूँ," टेसा ने कहा.

"इसमें कोई भी परेशानी की बात नहीं है," पापा ने जवाब दिया. "मुझे एक दोस्त की मदद करने में बहुत खुशी मिलेगी."



फिर पापा झुके और उन्होंने  
ध्यान से टेसा को उठा लिया.

फिर वे उसके घर की ओर चलने  
लगे.



## अंत के शब्द

आधे घंटे से भी कम समय में ट्राएंगल फैक्ट्री के 146 मजदूरों की मौत हो गई. उनमें से कुछ 14 वर्ष से कम उम्र के थे. ज्यादातर लोग आग और धुएं से मारे गए. 40 से ज्यादा लोगों ने फैक्ट्री की आठवीं और नौवीं मंजिल से छलांग लगाई थी. वे नीचे फुटपाथ पर गिरकर मर गए थे.

बाद में लोगों में इस बात को लेकर बहुत गुस्सा आया कि इस प्रकार की आग कैसे लग सकती थी. आग से बचने के लिए अतिरिक्त सीढ़ियां क्यों नहीं थीं? दरवाजे बंद क्यों थे? इतने लोगों को क्यों मरना पड़ा? उसके बाद हुए मुकदमे में, कारखाने के मालिकों को पूरी तरह निर्दोष पाया गया. ट्राएंगल फैक्ट्री ने, सभी कानूनी सुरक्षा शर्तों को पूरा किया था.

कई लोगों को उससे यह स्पष्ट हुआ कि अब कानूनों को बदलने की जरूरत थी. फैक्ट्रियों में फायर-अलार्म, अतिरिक्त निकास द्वार, आग से बचने वाले उपकरण और स्प्रिंकलर होने चाहिए जो आग पर स्वचालित रूप से पानी की बौछार करें. उन्हें नियमित रूप से अग्नि-अभ्यास भी करना चाहिए था ताकि श्रमिकों को पता चल सके कि आग लगने पर वो क्या करें और कैसे बचें. फैक्ट्री आग को पूरी तरह से रोकना शायद संभव न हो, लेकिन शायद ट्रायंगल फैक्ट्री में लगी आग की कारण, फिर कभी किसी आग दुर्घटना में इतने लोगों की मौतें न हों.